उपसंहार

उपसंहार

आधुनिक काल की महत्त्वपूर्ण दलित कहानी लेखिका 'सुशीला टाकभौरे की कहानियों का अनुशीलन' जब शुरू किया गया तो उनके समग्र साहित्य को जाँचते हुए फिर उनकी कहानियों का अनुशीलन वस्तुतत्त्व की दृष्टि से, चरित्र की दृष्टि से, समस्याओं की दृष्टि से और शिल्प की दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इन्हें निम्नलिखित अध्यायों के रूप में प्रस्तुत करके जो तथ्य हाथ आए वे इस प्रकार हैं -

प्रथम अध्याय - 'सुशीला टाकभौरे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' के अंतर्गत सबसे पहले सुशीला जी के व्यक्तित्व को परखा गया है। इसके अंतर्गत जन्म तथा बचपन, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा, परिवार, अर्थोपार्जन, बाह्य व्यक्तित्व, आंतरिक व्यक्तित्व (मिलनसार, अतिथ्यशील, संवेदनशील, भावुक, हँसमुख) रूचियाँ, साहित्यिक प्रेरणा, पुरस्कार आदि को विश्लेषित किया गया है। इसके अंतर्गत पाया कि सिवनी मालवा में उनका बचपन बीता। उनको आर्थिक कठिनाइयाँ कम महसूस हुई हैं। माता-पिता, गुरूजन, ससुरालवालों द्वारा साहित्यिक प्रेरणा प्राप्त हुई। जिससे उन्होंने उच्च शिक्षा हासिल की और साहित्य के क्षेत्र में अपना नाम रोशन किया। उनके बाह्य व्यक्तित्व के समान आंतरिक व्यक्तित्व भी बिल्कुल साफ है। आज वे एक अध्यापिका के रूप में कार्य कर रही हैं, साथ में साहित्य सेवा और समाज सेवा भी जारी है। जिन पुरस्कारों से उन्हें पुरस्कृत एवं जिनके द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया, वह उनकी साहित्य सेवा और समाजसेवा का उचित सम्मान है, ऐसा कहा जा सकता है।

इसके पश्चात् उनके कृतित्व को देखा गया। कृतित्व के अंतर्गत पाया गया कि सुशीला जी ने कहानी, काव्य, कुछ विवरणात्मक पुस्तकें और लेख लिखे हैं। उनकी साहित्य लेखन की यात्रा अब तक जारी है। उन्होंने दलित समाज और नारी के मन का सजीव चित्रण किया है। उनकी कहानियों की विशेषता यह है कि उनकी कहानियाँ आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में दलित और नारी समस्याओं का उद्घाटन किया है।

द्वितीय अध्याय - 'सुशीला जी की कहानियों का वस्तुगत अध्ययन' के अंतर्गत सुशीला जी के साहित्य की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया, जिसके अंतर्गत पाया कि उनकी अधिकतर कहानियाँ आत्मकथात्मक और मनोविश्लेषणात्मक हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के दो कहानी संग्रह प्रकाशित किए हैं। उनके कहानी संग्रह 'टूटता वहम' और 'अनुभूति के घेरे' के अंतर्गत कुल 20 कहानियाँ हैं। 'टूटता वहम' कहानी संग्रह के अंतर्गत पाया कि उन्होंने दलितों के दुख, दर्द को वाणी देने का प्रयास किया है। उनमें अन्याय, अत्याचार के खिलाफ लड़ने का साहस निर्माण किया है। उन्होंने दलितों में हो रहे बदलाव को भी दिखाया है। 'टूटता वहम', 'सिलिया', 'मेरा समाज', 'मंदिर का लाभ' आदि कहानियों में सवर्णों के उपरी दिखावे तथा छुआछूत और जातिभेद का चित्रण है।

'अनुभूति के घेरे' में नारी भावनाओं से जुड़ी कहानियाँ हैं। इन कहानियों में नारी मन के अंतर्द्वंद्व को प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में परंपराओं का पालन करती हुई नारी का चित्रण किया है। साथ ही नारी शिक्षा को भी महत्त्व दिया है। उन्होंने नारी को आत्मनिर्भर बनाने का साहस दिया है। साथ ही आज की भागदौड़ की जिंदगी में कामकाजी नारी की स्थिति का भी चित्रण किया है। 'सही निर्णय', 'घर भी तो जाना है' कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण है। 'त्रिशुल', 'कैसे कहूँ', 'सारंग तेरी याद में' कहानियों में नारी के अंतर्द्वंद्व को दिखाया है।

तृतीय अध्याय - 'सुशीला जी की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन' के अंतर्गत जब यह देखा गया कि सुशीला जी की 20 कहानियों में कुल चरित्र (प्रमुख और गौण) 27 हैं। इन सबका अलग-अलग दृष्टि से चरित्र-चित्रण किया है।

इन पात्रों का चरित्रगत अध्ययन करने से पहले चरित्र-चित्रण का स्वरूप, कहानी की पात्र-योजना, कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व आदि बातों की सैद्धांतिक जानकारी प्रस्तुत की गई है। उसके पश्चात् सुशीला जी की कहानियों के पात्रों के चरित्र-चित्रण का विश्लेषण किया गया है। सुशीला जी ने पात्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन किया है। उनके सभी पात्र निम्न वर्ग के हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सुशीला जी ने अपनी कहानियों में पात्रों का अत्यंत सुंदर ढंग से चरित्र-चित्रण किया है। हर पात्र की मानसिक वृत्तियों को उन्होंने खोला है। इसी कारण पात्रों के चरित्रांकन में सुशीला जी सफल दिखाई देती हैं।

चतुर्थ अध्याय - 'सुशीला जी की कहानियों में चित्रित समस्याएँ' इस अध्याय के अंतर्गत समस्याओं को देखा है। उनकी कहानियों में चित्रित दलित समस्याएँ, नारी समस्याएँ और कुछ सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। दलित समस्याओं के अंतर्गत छुआछूत की समस्या, जातिभेद, अशिक्षा, शोषण, व्यसनाधीनता, धर्मांधता, आर्थिक विपन्नता आदि समस्याओं का अंकन हुआ है। हमारे देश में आज भी छुआछूत और जातिभेद की भावना मिलती है। दलित लोग अशिक्षित होने के कारण शोषण के शिकार होते हैं। लेखिका ने दलितों को अन्याय, अत्याचार और शोषण के खिलाफ संघर्ष करने की शक्ति प्रदान की है।

नारी समस्याओं के अंतर्गत नारी का अंतर्द्वंद्व, नारी कुंठा, नारी का अहं, संत्रस्त नारी, कामकाजी नारी की समस्या, रूढ़ीवादी नारी, बेटा-बेटी भेद आदि समस्याओं का अंकन किया है। नारी शिक्षित होते हुए भी वह परंपराओं का पालन करने में नहीं चूकती। वह अपने परंपराओं से चले आए संस्कारों को नहीं छोड़ती। लेखिका ने नारी शिक्षा को अधिक महत्त्व दिया है। उनकी कहानियों में कुछ सामाजिक समस्याओं का भी चित्रण हुआ है। सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत पारिवारिक समस्या, अकेलापन, अविश्वास की समस्या आदि समस्याओं का अंकन हुआ है।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि सुशीला जी ने अनेक समस्याओं का चित्रण किया है।

पंचम अध्याय - 'सुशीला जी की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन' के अंतर्गत सबसे पहले शिल्प का स्वरूप, शिल्प संबंधी कुछ विद्वानों के विचार, शिल्प की अनिवार्यता आदि सैद्धांतिक बातों को प्रस्तुत किया है। इसके पश्चात् सुशीला जी के कहानियों का शिल्पगत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसके लिए कहानी के तत्त्वों का आधार लिया गया है। सबसे पहले कथावस्तु की सैद्धांतिक जानकारी हासिल करते हुए सुशीला जी की कहानियों की कथावस्तु को उस कसौटी पर

जाँचा गया। तब यह पाया गया कि सुशीला जी की सभी कहानियाँ संक्षिप्त, रोचक, कौतुहलवर्धक, सीधी, सरल भाषा से युक्त, प्रवाहमान, संगठीत होने के कारण कथावस्तु के सभी तत्त्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह करती है।

पात्र चरित्र-चित्रण इस तत्त्व की दृष्टि से जब इन कहानियों को जाँचा गया तो यह पाया गया कि पात्रों का चारित्रिक विकास अत्यंत स्वाभाविक गति से हुआ है। पात्रों की विश्वसनीयता, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का परिचय देती है। उनकी कहानियों के सभी पात्र निम्नवर्गीय हैं। इन पात्रों के द्वारा सुशीला जी शोषण के विरूद्ध आवाज उठाती हैं।

कथोपकथन या संवाद की दृष्टि से यह पाया गया कि सुशीला जी ने अधिकतर कहानियाँ आत्मकथात्मक शैली में ही लिखी हैं। फिर भी कुछ कहानियों में सुंदर संवादों का प्रयोग किया है। उनके संवादों की विशेषता है कि वे संक्षिप्त कथावस्तु के विकास में सहायक और चरित्रांकन के लिए उपयोगी साबित हुए हैं। सांकेतिकता, रोचकता, नाटकीयता आदि अनेकानेक गुणों के कारण संवाद, कथोपकथन तत्त्व की दृष्टि से सुशीला जी की कहानियाँ सफल हो गई हैं।

देश-काल तथा वातावरण इस एकमात्र तत्त्व में सुशीला जी अत्यंत पिछड़ गई हैं। उनकी सभी कहानियाँ दलित लोगों से संबंधीत होते हुए भी उनमें इस तत्त्व का अंकन नहीं हुआ है। कुछ कहानियों में इस तत्त्व का चित्रण भी हुआ है, वह अत्यंत अल्प मात्रा में हुआ है और सार्थक भी हुआ है।

भाषा शैली की दृष्टि से सुशीला जी की कहानियाँ अत्यंत सुंदर एवं सजीव बन गई हैं। उनकी भाषा में शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप जैसे - तत्सम शब्द, अरबी-फारसी शब्द, अँग्रेजी शब्द, द्विरूक्त शब्द, सार्थक-निरर्थक शब्द, अपशब्द, मुहावरें, कहावतें आदि दिखाई देते हैं। उन्होंने आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, संवादात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, स्मृतिपरक आदि कई प्रकार की शैलीयों का प्रयोग किया है, जिससे भाषा शैली की दृष्टि से उनकी कहानियाँ सफल हो गई हैं।

सुशीला जी ने सिर्फ मनोरंजन के एक मात्र उद्देश्य से कहानियाँ नहीं लिखी हैं बल्कि दलितों की समस्याएँ और नारी समस्याओं का अंकन किया है। दलितों की पिछड़ी स्थिति का सजीव चित्रण कर उसकी ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ठ करने के उद्देश्य से कहानियाँ लिखी हैं। उनकी

कहानियों का प्रमुख उद्देश्य स्त्री-पुरुष समानता रहा है। अपनी कहानियों को अपने उद्देश्य तक पहुँचाने में सुशीला जी सफल हो चुकी हैं।

कुल-मिलाकर हम कह सकते हैं कि सुशीला जी की कहानियाँ वस्तुतत्त्व की दृष्टि से, चरित्रांकन की दृष्टि से और शिल्पतत्त्व की दृष्टि से पूरी तरह से सफल हो चुकी हैं। अपनी कहानियों में अनेक समस्याओं का अंकन करने में वे सफल हुई हैं। इसी कारण हम कह सकते हैं कि सुशीला जी की कहानियाँ आधुनिक युग में दलित और नारी का प्रतिनिधित्व करनेवाली कहानियाँ हैं।